بسم الله الرحمن الرحيم

कुआलालंपुर घोषणा

प्रस्तावना (यह घोषणा का हिस्सा नहीं है) :

कुआलालंपुर घोषणा दरअसल कुआलालंपुर फोरम के वार्षिक सम्मेलन का नतीजा है जो डाक्टर मोहम्मद महातिर की अध्यक्षता में २७,२८ , २९ नवंबर २०१५ को कुआलालंपुर, मलेशिया में आयोजित हआ। जिसमें विभिन्न इस्लामी देशों के विद्वानों और राजनीतिज्ञों ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। तीन दिन तक उम्मत की वर्तमान स्थिति का गहन विश्लेषण किया गया। विशेष रूप से कई देशों में पाई जाने वाली अराजकता, चिन्ता, तोङ फोङ , स्वतंत्रता की बाधाएं व मुशकिलें , लोकतांत्रिक बदलाव लाने, और अधिकारों को सुनिश्चित करने के संबंध में सम्मेलन के प्रतिभागियों ने यह राय पेश की कि " कुआलालंपुर घोषणा " के नाम से एक घोषणा जारी की जाए जो मौजूदा संकट से छुटकारा पाने और स्थिति के अधिक सुधार के लिए उठाए जाने वाले कदम के बारे में उन लोगों का ध्यान आकर्षित करे जिनकी स्थिति पर मजबूत पकड़ है। इस्लामी दुनिया के सौ प्रभावशाली हस्तियों लक्ष्य बनाया जाए , जनरल सेक्रेट्रिएट के सदस्यों और कुआलालंपुर फोरम के विद्वान और चिन्तक प्रतिनिधिमंडल के रूप में उनसे मुलाकात करके यह घोषणा उनके हवाले करें। तथा कई देशों में सिलसिलेवार सेमिनार और प्रेस सम्मेलनों द्वारा इस घोषणा के लिए जनमत बनाने की कोशिश की जाए।

इस घोषणा की तैयारी के लिए सम्मेलन के अंतिम दिन कई कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें मुख्य सिफारिशों को मंजूर किया गया। और समापन सत्र में सम्मेलन के अध्यक्ष डॉक्टर महातिर मोहम्मद ने उसे पढ कर सुनाया। इस बात पर सहमति बनी कि महत्वपूर्ण सिफारिशों की रोशनी में एक समिति घोषणा की तैयारी में सक्रिय रहे। १८ जनवरी, २०१६ को इस परियोजना को उपयोगी बनाने के लिए एक सेमिनार आयोजित किया गया जिस में प्रतिभागियों की आधी संख्या ने भाग लिया और निम्न प्रस्ताव पारित किया।

कुआलालंपुर घोषणा

२९,२८,२७ नवंबर २०१५ को कुआलालंपुर, मलेशिया में चिंता व सभ्यता के विषय पर आयोजित सम्मेलन में हम लोग जमा हुए

अ - इस अवधारणा के साथ कि:

१- अल्लाह ने विविधता और मतभेद को वैशविक और सामाजिक रूप से सुन्नत घोषित किया है जो कियामत तक बाकी रहने वाली है जैसा कि इरशाद बारी तआला है। "तुममें से हरेक के लिए हम एक शरअत और एक राह निर्धारित की। अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही उम्मत बना देता लेकिन उसने यह इसलिए किया कि जो कुछ उसने तुम लोगों को दिया है इस में तुम्हारी परीक्षा करे अतः भलाइयों में एक दूसरे से आगे बढ जाने की कोशिश करो आख़िर कार तुम सब को अल्लाह की ओर पलटकर जाना है वह तुम्हें मूल तथ्य बता देगा जिसमें तुम मतभेद करते रहे हो "(सूरह माइदाः ४८)।

२- अल्लाह ने इंसान के सम्मान और उसके जीवन की पवित्रता को बाकी रखा जैसा कि इरशाद रब्बानी है "हमने मनुष्यों को सम्मान दिया, उनको धरती और जल में सवारी दी, पाकीज़ा रोज़ी अता की और अपनी बहुत सी सृषटि पर वरीयता दी" (सूरह इसरा ७०) दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया "इसलिए हमने इसराइल की संतान पर यह आदेश लिख दिया था कि जिसने किसी व्यक्ति की खून के बदले या जमीन में दंगा फैलाने के सिवा किसी और कारण से हत्या की उसने मानो तमाम इंसानों का हत्या कर दी और जिसने किसी को जीवन दिया उसने मानो तमाम इन्सानों को जीवन दिया, मगर उनका हाल यह है कि हमारे रसूल लगातार उनके पास खुले खुले निर्देश लेकर आये फिर भी उनमें अधिकतर लोग ज़मीन में अत्याचार करने वाले हैं " (सूरह माइदाः ३२)।

३- स्वतंत्रता, शरई आदेश का पालनकर्ता बनाने और इमामत व अमारत की मौलिक शर्त है इसलिए जो भी ईमान लाएगा वह अपनी रजामंदी से लाएगा न कि जबरदस्ती करने से, तो ऐसा व्यक्ति लोगों की इमामत नहीं कर सकता जिसे लोग नापसंद करते हो और लोगों के सुझावों ही से हाकिम चयन किया जाएगा , अल्लाह तआला का फरमान है " यदि तुम्हारा रब चाहता तो जितने लोग ज़मीन पर हैं सब के सब ईमान ले आते , तो क्या तुम लोगों पर ज़बरदस्ती करना चाहते हो कि वे मोमिन हो जाएँ " (यूनुसः 99) दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया " दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं है क्योंकि हिदायत व गुमराही स्पष्ट हो चुकी है " (बक़राः 256) तथा इरशाद बारी तआला है " इनके मामले आपसी सुझावों से तय पाते हैं " (शूराः 38) और आप स.अ.व. ने फरमाया: " तीन लोग ऐसे हैं जिनकी नमाज़ उनके सिर से एक बालिश्त भी ऊपर नहीं जाती उनमें एक वे हैं जो लोगों की इमामत करें हालांकि लोग उन्हें नापसंद करते हों। " (यह हदीस हसन है और इब्ने माजा ने इसकी रिवायत की है)

४- अल्लाह इंसाफ का आदेश दिया है और इसे सभी ईमानवालों के लिए अनिवार्य गुण बताया है, विशेष रूप से अधिकारियों और ज़िम्मेदारों के लिए इसे बुनियादी शर्त बताया है। साथ ही हर हाल में अपने परिवार, रिश्तेदारों और विरोधियों के साथ इसकी आज्ञा दी है, जैसा कि इरशाद बारी तआला है " अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि अमानत वालों की वस्तुएं उनके हवाले कर दिया करो और जब लोगों में फैसला करने लगो तो न्याय से फैसला किया करो। अल्लाह तुम्हें बहुत खूब उपदेश देता है। बेशक वह सुनता और देखता है " (सूरत निसा 58) और इसी सूरह की आयत १३५ में इरशाद फ़रमाया "ऐ ईमान वालो! इन्साफ पर जमे रहो और अल्लाह के लिए सच्ची गवाही दो चाहे उसमें तुम्हारा या तुम्हारे माता-पिता और रिश्तेदारों का नुकसान ही हो। अगर कोई अमीर या फकीर है तो अल्लाह उनका हितैषी है। तो तुम मनेच्छाओं के पीछे चल कर न्याय न छोड़ दो। अगर आप जटिल शहादत दोगे या शहादत से बचना चाहोगे तो जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे सभी कार्यों से परिचित है "और अल्लाह तआला एक जगह कहता है" ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए न्याय की गवाही देने के लिए खड़े हो जाया करो और लोगों की दुश्मनी तुम्हें इस बात पर आमादा न करे कि न्याय छोड़ दो। न्याय किया करो कि यही संयम की बात है और अल्लाह से डरते रहो निस्संदेह वह तुम्हारे कर्मों से अवगत है "(सूरह माइदाः ३२) .एक हदीस में आपने कहा " जिस बंद् को अल्लाह तआला किसी रईयत के संरक्षक बना दे और वह रईयत के साथ विश्वासघात करते हुए मरे तो अल्लाह उस पर स्वर्ग हराम कर देता है " (बुखारी)

५- अल्लाह तआला ने एक मुसलमान पर अपने मुसलमान भाई के अपमान को हराम और इसी तरह आपस में बैर और दुश्मनी को अवैध करार दिया है तथा उन्हें आपस में एकता बनाए रखने का आदेश दिया है और आपसी मतभेद और फूट से रोका है। जैसा कि अल्लाह का इरशाद है "और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़े रहना और अलग अलग न होना और अल्लाह की इस कृपा को याद करो जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों में उलफ़त डाल दी और तुम उसकी कृपा से भाई भाई हो गए। और तुम आग गड्ढे के किनारे तक पहुँच चुके थे तो अल्लाह ने तुमको उससे बचाया, इस प्रकार अल्लाह तुम्हें अपनी आयतें खोल खोल कर सुनाता है कि तुम हिदायत पाओ "(सूरह आले इमरान १०३)। और रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने कहा है कि " एक मुसलमान पर दूसरे मुसलमान की तीन चीजें हराम हैं उसका खून, उसका माल और उसकी इज़्ज़त व आबरू " (मुस्लिम)

६- शांति और स्थिरता अल्लाह का एक महान आशीर्वाद है जिसे अल्लह ने कुरआन में बार बार याद दिलाया है तथा इसे आजीविका और विकास से जोड़ दिया है और इसे सत्य धर्म और सत्कर्मों को बढ़ावा देने का रास्ता बताया है, अल्लाह तआला का इरशाद है "और जब इब्राहीम ने प्रार्थना की कि हे पालनहार !इस जगह को शांति का शहर बना और इसके रहने वालों में से जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान साएं उन्हें खाने के लिए मेवे दे " (सूरह बक़रा 126) दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया " वे इस घर के रब की इबादत करें जिसने उन्हें भूख में खिलाया और भय से शांति दी " (सूरतुल क़ुरैशः 3, 4) । और रसूलुल्लाह

(स.अ.व.) ने फरमाया: " जिसकी सुबह इस हाल में हुई कि उसे अपने घर में शांति और व्यवस्था , बदन में सुख , और दिन भर की खुराक प्राप्त हो उसे मानो पूरी दुनिया प्रस्तुत कर दी गई " (बुखारी) ।

७- अम्र बिल मारूफ़ व नह्य अनिल मुनकर और खैरख्वाही इस्साम का मूल है , इसलिए विभन्न रायों विचारधाराओं का भसे तरीके से जवाब देना चाहिए और उस पर सब्र का प्रदर्शन करना चाहिए। ताकि मुसलमानों की भलाई और सुधार हो , और जमीन बिगाड से सुरक्षित रहे। .जैसा कि इरशादे रब्बानी है " ऐ ईमान लानेवालो ! जितनी उम्मतें लोगों में पैदा हुईं तुम उनमें सबसे बेहतर हो कि नेक काम करने का आदेश देते हो और बुरे कामों से रोकते हो और साथ ही अल्लाह पर ईमान रखते हो ।" (आले इमरानः ११०) दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया " अल्लाह लोगों को एक दूसरे से हटाता नहीं रहता तो धरती तबाह हो जाती लेकिन अल्लाह दुनिया वालों पर बड़ा मेहरबान है " (सूरह बक़रा २५१))।और रसूल अल्लाह (स.अ.व.) ने फरमाया: " दीन शुभचिंता (भसाई चाहने का) का नाम है " यह बात अपने तीन बार दोहराई, साथी ने अर्ज़ किया किनके लिए ऐ अल्लाह के रसूल? आपने फ़रमाया अल्लाह, उसकी किताब, उसके रसूल और मुसलमानों के इमामों और आम जनता के लिए " (मुस्लिम)

८- मुसलमान परस्पर एक शरीर की तरह हैं। अल्लह तआला ने उन्हें आदेश दिया है कि वे एक दूसरे के मामलों पर ध्यान दें क्योंकि दूसरों की तुलना में वे एक उम्मत हैं। अल्लह तआला ने फरमाया "और यह तुम्हारी पार्टी एक ही पार्टी है और मैं तुम्हारा रब हूँ, तो तुम मुझसे डरते रहो "(सूरह मोमनून -५२) दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया" मुस्लिम तो आपस में भाई भाई हैं, तुम अपने दो भाइयों में सुलह करा दिया करो और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम पर दया की जाए " (सूरह हुजुरात -१०) और हदीस में है कि "मोमिनीन को आपसी प्रेम, भाईचारे और सहानुभूति में इस तरह होना चाहिए जिस तरह एक इंसान का शरीर होता है कि अगर उसका कोई हिस्सा दर्द महसूस करे तो पूरा शरीर उसके कारण अनिद्रा और बुखार से पीड़ित हो जाता है " (सर्वसम्मत)

९- अल्लाह ने ब्रह्मांड को मनुष्य के लिए अधीन कर दिया है, उसे सुनने की शक्ति, दृष्टि और बुद्धि धन से सम्मानित किया है ताकि वह ब्रह्मांड के रहस्यों का खुलासा कर सके और साभांवित हो। अल्लाह का इरशाद है "और जो कुछ आकाश और धरती में है वह सब उसने अपने आदेश से तुम्हारे काम में लगा दिया निस्संदेह जो लोग विचार करते हैं उनके लिए इसनें निशानियां हैं" (सूरह जासिया -१३) दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया "और वही है जिसने तुम्हारे कान और आँखें और दिल बनाए लेकिन तुम कम ही शुक्र अदा करते हो" (सूरह मोमिनून -७८) ।

१०- अल्लाह ने ज्ञान प्रतिष्ठा दी, विद्वानों का स्थान ऊंचा किया और रचना एवं विकास को कामयाब करने में चिन्तन मनन पर जोर दिया जैसा कि इरशाद बारी तआला है "कह दो कि मैं तुम्हें सिर्फ एक बात की नसीहत करता हूँ कि तुम अल्लाह के लिए दो दो और एक एक खडे हो जाओ फिर विचार करो "(सूरह सबा ४६) ।

दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया "जो लोग तुम में से ईमान लाए और जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया अल्लाह उनके स्तर को ऊंचा करेगा" (सूरह मुजादला ११) । नबी करीम स अ व ने कहा " जब इंसान मर जाता है तो उसके सारे कर्मों का सिलसिला टूट जाता हैं, सिवाय तीन चीजों के : १.सदका-ए जारीया, २ । ऐसा ज्ञान जिससे लाभ उठाया जा सके ३ । और ऐसी नेक औलाद जो उसके लिए दुआ करे " (मुस्लिम)

११- अल्लाह ने ईमान वालों को जमीन में चलने फिरने, बल और संसाधनों को अपनाने और उस तैयारी का आदेश दिया है जो उन्हें दुश्मन के हमले और अपमान और पिछड़ेपन से बचा सके। इरशाद बारी तआला है "और उनसे कहो कि कर्म किए जाओ अल्लाह, रसूल और मोमिनीन सब तुम्हारे कर्मों को देख लेंगे और तुम प्रत्यक्ष और परोक्ष को जानने वाले अल्लाह की ओर लौटाए जाओगे, तो जो कुछ तुम करते रहे हो वह सब तुमको बता देगा "(सूरह तौबा १०५) और दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया" और जहां तक हो सके सेना और घोड़ों को तैयार रखकर उनके मुकाबले के लिए मुस्तैद रहो ताकि तुम्हारे शत्रुओं और उनके अलावा उन पर जिन्हें तुम नहीं जानते मगर अल्लाह जानता है हैबत बैठी रहेगी। "(सूरह अनफालः ६०)

१२- वास्तव परिवर्तन सामाजिक नियमों के अधीन है जिसका संबंध मनुष्य के इरादे और अपना और अपने पर्यावरण का सुधार करने में रुचि लेने से है और अल्लाह की मदद उसके पक्ष में सुनिश्चित है जिसने अथक संघर्ष किया और अल्लाह पर पूरा भरोसा किया ।.जैसा कि अल्लाह ने फरमाया "अल्लाह तआला किसी कौम की हालत नहीं बदलता जब तक कि वे खुद उसे न बदलें जो उनके दिलों में है" (सूरह राद ११) दूसरी जगह इरशाद बारी हैः "मेरा इरादह तो अपनी शक्ति भर सुधार करने का ही है मेरी ताकत अल्लाह की मदद से है उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की ओर मैं पलटता हूँ "(सूरह हूद ८८) । और इरशाद रब्बानी है" ऐ ईमान वालो ! तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे कदमों को जमा देगा "। (सूरह मुहम्मद ७) ।

१३- नागरिकता और समाज का अर्थ आपसी राष्ट्रीयता से जुड़ा है जिसका संबंध मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमीन दोनो से है और यह वास्तविक इस्लामी संविधान का प्रतिनिधित्व करता है जिसे मुहम्मद अरबी ने मदीना और उसके आसपास में स्थापित किया था।

ब - इसी तरह हम इकट्ठा हुए इन मामलों को ध्यान में रखते हुए कि:

१- नैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति जो कि सही इस्लामी अर्थों के विरुद्ध है जिससे आज मुसलमान ग्रस्त हैं।

२- पिछड़ापन, सांस्कृतिक पतन, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अत्यंत कमजोरी, अन्यायपूर्ण विश्व शक्तियों की अधीनता, चिंतन, ज्ञान और अंवेषण में गिरावट, गरीबी और भुखमरी अज्ञानता व गुमराही की ऐसी हालत जिससे आज मुसलमान जूझ रहे हैं।

3- इस्लामी दुनिया एक महान सभ्यता, एक शानदार इतिहास, एक महत्वपूर्ण रणनीतिक स्थान और व्यापक प्राकृतिक संसाधन रखती हैं और यही बात इसे लोगों के लाभ, विकास और प्रगति के योग्य बनाती है और यह विश्व शांति और सुरक्षा के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

४- खूनी युद्ध, जबरदस्त अराजकता और ऐसी दुखद स्थिति जिससे आम तौर पर पूरा मुस्लिम समुदाय और विशेष रूप से अरब दुनिया ग्रस्त है।

५- उम्मत में युद्ध और गंभीर झड़पें अधिक त्रासदी का कारण हुईं जिससे लोग नुकसान उठा रहे हैं विशेष रूप से कमजोर लोग जिनमें बच्चे, महिलाएं और बुजुर्ग शामिल हैं।

६- मानव इतिहास इस बात पर गवाह है कि अत्याचार, साम्राज्यवाद, और लोगों की किस्मतों पर एकाधिकार से न तो शांति और व्यवस्था कायम हुई है और न ही निर्माण और विकास हुआ है।

७- अरब देशों में लोकतांत्रिक परिवर्तन की राह आसान नहीं है। आज़ादी की मांग करने वालों का सफाया किया जा रहा है, अधिकारों का हनन सामान्य है, सामाजिक संगठन अराजकता व टूट फूट से पीड़ित हैं और उनके यहां सांस्कृतिक सहयोग विलुप्त है।

८- एक ओर जहां लोगों की बड़ी संख्या स्वतंत्रता के रास्ते में जबरदस्त बलिदान दे रही है और अत्याचार के सामने अपार धैर्य का प्रदर्शन कर रही है तो वहीं दूसरी ओर जनता का एक बड़ा भाग नकारात्मक रुझान रखता है और स्वतंत्रता के इस अभियान में असहयोग का सबूत दे रहा है।

९- ऐसी जातियां जिन्होंने सामाजिक अनुबंध की स्थिरता और सम्मान की कोशिश की और इस के आधार पर विविधता का विचार करते हुए उन्होंने अपने मामलों को अंजाम दिया, सार्वजनिक रूप से उन्हें स्वीकृति मिली, देश समृद्ध हो गया और निर्माण और विकास के रास्ते पर जा रहा है।

१०- वे देश जहां न्याय पसन्द सरकार का बोलबाला है लोकतांत्रिक मूल्य बड़े मज़बूत हैं और लोगों को स्वतंत्रता हासिल है। चाहे वे गैर मुस्लिम देश हों या कुछ इस्लामी देश , उन्होंने खूब विकास किया और शांति व सलामती के आशीर्वाद से फ़ैज़ सफ़ल हैं।

उपरोक्त सभी बातों के मद्देनजर हम अपनी पूरी जिम्मेदारी के साथ और सभी मुसलमानों के राजनीतिक, बौद्धिक और धार्मिक हित के लिए निम्नलिखित बातों की ओर आमंत्रित करते हैं :

पहला : सरकारी राजनीतिक संगठन:

1- एसे देशों का निर्माण और विकास की जिम्मेदारी लें जिन पर वे शासन कर रहे हैं और वैज्ञानिक, आर्थिक और रक्षा शक्ति के स्रोत अपनाने की भी जिम्मेदारी लें और ऐसा तभी संभव है जब कि अच्छे शासन के आधुनिक विश्व स्तरीय पैमाने को अपनाया जाए जिसकी जड़ें पिछली इस्लामी सभ्यता के सैद्धांतिक और व्यावहारिक विरासत में घुसी हूँ।

२- जनता के धन की सुरक्षा करें, ईमानदारी और जिम्मेदारी की भावना पूर्ण हों। भ्रष्टाचार से बचें और उसके सभी रूपों को समाप्त करें। प्रभावशाली स्थानों से बिगाड़ पैदा करनेवालों का सफाया करें।

३- मानव गरिमा की बहाली, सभी नागरिकों के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने, प्रामर्श दात्री सभा और लोकतंत्र के सिद्धांतों को लागू करने, लोगों के बीच न्याय के साथ शासन, उपदेश और खैरख्वाही, अम्र बिल मारूफ़ व नह्य अनिल मुनकर की अनुमति और सामाजिक और प्रशासनिक जवाबदेही को बढ़ावा दें।

४- खून की वैधता, सरकार की स्थिरता पर जोर, पड़ोसी के अधिकारों की बहाली, उम्मत की एकता की कोशिश और उसके सभी घटकों के बीच सहयोग को बढ़ावा दि. जाए।

५- इस्लामी देशों के बीच समस्याओं को हल करने के लिये संवाद और वार्ता को अपनाने पर जोर दें, युद्ध और संघर्ष से दूर रहें, राजनीतिक और सरकारी हितों और उद्देश्यों की खातिर लोगों को धार्मिक, सामुदायिक, जातीय और भाषाई आधार पर न उकसाएँ। आपसी मतभेद और झगड़ों में बाहरी शक्तियों की मदद न लें।

६- इस्लामी शरीयत के नियम व सिद्धांतों को लागू करने के लिये गंभीर प्रयास करें, मुसलमानों और पूरी मानवता के हित की खातिर विभिन्न सामान्य समस्याओं में इस्लामी सभ्यता को विकल्प रूप में पेश करें और इस काम में सहयोग करने वाली सामाजिक शक्तियों को बढावा दें।

७- उलमा का सम्मान करें, उनके सुझावों का सम्मान करें और देशी संस्थाओं को चलाने के लिए विशेषज्ञों पर निर्भर करें।

८- फिलिस्तीन के मामले का पूरा समर्थन करें, और इसमें किसी भी तरह की कोताही या सौदा बाज़ी से दूर रहें।

दूसरा: उलमा और प्रचारक:

१- नवीकरण की जिम्मेदारी का एहसास करना, समकालीन आवश्यकताओं के संदर्भ में इस्लाम की फिकही और बौद्धिक प्रणाली को ल्वीकार करना, विभिन्न क्षेत्रों में मौजूदा चुनौतियों का जवाब देना और ऐसी फिकही अकादमियां कायम करना जहां सामूहिक इज्तेहाद हो सके।

२- फ़िक़्ही मसलकों को मंजूर करना और उनमें आपसी संचार व समन्वय पैदा करना, सांप्रदायिक विवाद से बचना और इसे इस्लाम और मुसलमानों के लिए बड़ा खतरा समझना।

३- जनता का नेतृत्व इस ढंग से करना जो दीनी व दुनियावी दृष्टि से उनके लिए, उनके देशों, उनकी उम्मतों और सभी मानवता के लिए लाभदायक हो। सकारात्मक व प्रभावी कामों और सभ्य व्यवहार के लिए उन्हें तैयार करना, सामाजिक कामों में भाग लेने के लिये उन्हें तैयार करमा और हमेशा न्याय के मामलों विशेष तौर पर फ़िलिस्तीन से जोडे रखना।

४- आपस में सुधार का काम, मुसलमानों के बीच सुलह की कोशिश, उनके बीच भाईचारे व मुहब्बत, एक दूसरे को माफ करने का माहौल पैदा करना।

५- शरई आदेश के संबंध में हक पर जमे रहना, व्यक्तिगत हितों या सार्वजनिक दबाव शासक की इच्छाओं के अनुसार फ़िक़्ही रायों और फतवों को परिवर्तित न करना। हक व हकदार का समर्थन और संभावित संसाधनों और सूत्रों तथा ज्ञान व खैर खवाहाना शैली में अधिकारियों को नसीहत करना।

६- स्पष्ट शैली में उग्रवाद और हिंसा के खिलाफ खड़े रहना क्योंकि यह देश की अखंडता के लिए खतरा है, उससे इस्लाम के छवि बिगडती है, मुस्लिम समाज का कौशल खत्म हो जाती हैं, आतंकवाद के खात्मे की आड़ में तानाशाही सरकारों का नियंत्रण बढ़ जाता है, विदेशी हस्तक्षेप होता है, और उदारवादी आंदोलनों की ओर से की जाने वाली सांस्कृतिक कोशिशें बाधित होती हैं,इस संबंध में विशेष रूप से नवजवानों का बौद्धिक और धार्मिक मार्गदर्शन करना।

७- इस्लामी के विरोधी भटकावपूर्ण विचारधारा, नास्तिक सिद्धांतों, परिवार और समाज को टुकडे टुकडे करने वाली अश्लीलता का अंत करना, और इस संबंध में विशेष रूप से नई पीढ़ी का बौद्धिक, वैज्ञानिक और सामूहिक मार्गदर्शन करना।

तीसरा: चयनित बौद्धिक और राजनीतिक दल और सिविल सोसायटी की संस्थाएं :

१- शांतिपूर्ण निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा के लिए सिद्धांत व नियम तैयार करना, देशी अखंडता को नुकसान पहुंचाने वाले राजनीतिक और सामाजिक विवादों से दूर रहना, धार्मिक और गिरोही मतभेदों को हवा देने वाले बयान से बचना क्योंकि इससे घृणा में वृद्धि होती है और मुसलमानों के बीच दुश्मनी की खाई बढ़ जाती है।

२- नए नए विचार पेश करना और उनमें नवीनता पैदा करते रहना, विभिन्न कार्यक्रमों और परियोजनाओं में प्रतिस्पर्धा करना, जनता के बौद्धिक और राजनीतिक स्तर को बढ़ाने में मदद करना, उनकी भावनाओं की व्याख्या के लिए अवसर प्रदान करना, विभिन्न शांतिपूर्ण संसाधनों के जरिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पेश आने वाली समस्याओं में उनकी राजनीतिक भागीदारी और प्रभाव को बढ़ावा देना।

३- अच्छे आचरण का प्रदर्शन करना, जनता की राय का सम्मान करना, लोकतांत्रिक परिणाम को स्वीकार करना, जनता के बीच स्वतंत्रता की संस्कृति को सार्वजनिक करना, व्यक्तिगत हितों को ताक पर रखकर भ्रष्ट और दमनकारी सरकारों का साथ देने से इनकार करना।

४- सभी प्रकार उग्रवाद की निंदा करना, चाहे उदार धर्मनिरपेक्ष अतिवाद हो जो वास्तविक स्वतंत्रता, लोकतंत्र और इस्लामी मूल्यों के खिलाफ है या धार्मिक उग्रवाद हो जो इस्लाम के सही अर्थ के विपरीत है और उम्मत की स्थिरता और शांति और सुरक्षा के लिए खतरा है मुस्लिम समाज इस समय दोनों प्रकार के अतिवाद से ग्रस्त है।

५- आम सहमति बनाने की कोशिश करना, परामर्श को सार्वजनिक करना, और सार्वजनिक हित की खातिर एकता को बनाए रखना विशेष रूप से संकट और कठिन परिस्थितियों के दौरान।

६- करपशन का अंत करना, कई शांतिपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक तरीकों और खैरख्वाही द्वारा उत्पीड़न व शोषण का सफाया करना और इसके लिए धैर्य का प्रदर्शन करना।

७- लोकतांत्रिक तबदीली लाने के लिए गंभीर और उपयोगी परियोजनाओं के जरिए सरकारी एजेंसियों में सुधार करना और शासकों को समझाना कि लोकतंत्र से सभी का हित संबंद्ध है और शोषण व अत्याचार के बजाय यह सभी को स्वीकार्य है।

८- सिविल सेसायटी और गैर सरकारी संगठनों के नेटवर्क को बढावा देना , इसकी विधि में सुधार करना, नित नये विभाग स्थापित करना जैसे कौम की प्रगति के लिए विभिन्न योजनाओं को अंजाम देने वाला विभाग, सकारात्मक लोगों को प्रशिक्षित करने विला विभाग, समाज को शक्तिशाली बनाने वाला विभाग और सरकारी एजेंसियों के साथ संतुलन और सद्भाव बनाए रखने वाला विभाग।

९- जनमत बनाने, लोगों के बौद्धिक और नैतिक मूल्यों को बढावा देने के लिए मीडिया का उपयोग करना और उसकी ताकत को समझना, पेशेवर सिद्धांतों पर भरोसा करना, मुस्लिम समाज के विचारों के विकास में

सहयोग करना जो उसके मूल्यों से मेल खाता हो, उसके मानसिक स्तर को उठाता हो और कर्तव्यों में लापरवाही बरतने से बचाता है।

चौथा: इस्लामी तहरीकें

१- अपनी ताकत व प्रभाव की जिम्मेदारी को महसूस करें इस तरह से कि वह अधिकतर अरब और मुस्लिम देशों में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक ताकत हैं।

२- अपने सिद्धांत, संगठनात्मक प्रणाली, नेतृत्व और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को इस तरह नवीनीकृत कि वह ऐसी चुनौतियां का मुकाबला कर सकें जिससे आज वे विभिन्न स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रों और विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्रों में जूझ रहे हैं।

३- विभिन्न पदों का वितरण बहाल करें विशेष तौर से जिनका संबंध सुधारात्मक और संगठनात्मक पदों से है और विशेषज्ञता वाली संस्थाओं की ओर ध्यान दें जिससे नवीकरण और का माहौल बनता है और विभिन्न क्षेत्रों में अपनी ऊर्जा को कार्यांवित किया जाता है।

४- अपने संदेश को आम करने और अपने मिशन को जारी रखने के लिए युवाओं का सहारा लें और उन्हें अपने संगठनों में प्रमुख भूमिका निभाने का इस तरह से योग्य बनाएँ जो नई पीढ़ी के बीच उत्कृष्ट नेतृत्व एकजुटता का कारण बने । साथ ही साथ महिला क्षमताओं को परवान चढ़ाने की कोशिश और उम्मत के विभिन्न क्षेत्रों के निर्माण में भागीदारी के लिए उनके सहयोग करें।

५- हमेशा जनता से संबंधों को बनाए रखें, उनसे निकटता बनाए रखें, उनके साथ विनम्रता से पेश आएं, अपनी परियोजनाओं को पूरा करने के लिए उन्हें शरीक करें और विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय और सकारात्मक काम करने का मार्गदर्शन और प्रशिक्षण दें ।

६- लोगों के लाभ के लिए अपने कार्यक्रमों और प्रदर्शन में सुधार करें और अपने विकल्प को ज्ञान और यथार्थवादी आधार पर ऐसे आसान और आधुनिक शैली में प्रस्तुत करें जो उनकी जरूरतों और हितों के अनुरूप हो।

७- धैर्य का प्रदर्शन करें, शांतिपूर्ण तरीके और अपनी सांस्कृतिक परियोजनाओं पर प्रतिबद्ध रहें और बाधाओं के बावजूद अपना संघर्ष जारी रखें।

८- अपने बीच एकता पैदा करें, आपसी गुटबाजी का समाधान खोजें, अपने काम को सांसारिक संस्थानों की आवश्यकताओं के अनुसार बनाएं, जिससे आपसी सहयोग और एकता का वातावरण बना रहे और देश व जनहित की खातिर सांस्कृतिक परियोजनाओं में सहायक हो।

९- अनुकूल और आम स्थानीय कार्य करने की कोशिश करें, जनहित के मद्देनजर संभव सीमा तक विभिन्न

सार्वजनिक और सरकारी शक्तियों के साथ सहयोग करें जिससे देश की अखंडता बरकरार रहे, समाज के मूल्य और सिद्धांतों सुरक्षित रहें, आदमी की स्वतंत्रता और पवित्रता पर कोई आंच न आए।

१०- क्षेत्रीय विकास को प्राथमिकता दें, देशभक्ति और उम्मत से संबंध के बीच संतुलन बनाए रखें, और उनके बीच वैश्विक संपर्क तंत्र को स्वीकार करें , जिससे लोकतांत्रिक सिद्धांतों, स्थानीय और मुसलमानों के हितों के लिए साझा लक्ष्यों की प्राप्ति हो।

पांचवां: अरब और मुस्लिम जनता

१- वैज्ञानिक, बौद्धिक और प्रशिक्षण के दायित्वों को पूरा करने और इस्लाम से संगत तरीका अपनाने की पूरी कोशिश करें।

२- बदलाव के काज में भाग लें, अम्र बिल मारूफ़ व नह्य अनिल मुनकर और खैरख्वाही द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में सार्वजनिक कामों के सुधार में स्थायी और प्रभावी भूमिका निभाएं।

३- आर्थिक स्तर पर लगातार संघर्ष के माध्यम से अपने देश के निर्माण और विकास, और सिविल समाज के विभिन्न नेटवर्क के माध्यम से अन्य संगठित स्वैच्छिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

४- सत्य और सत्यपक्षीय का साथ दें तथा शांति और व्यवस्था कायम रखते हुए लाभदायक, और शांतिपूर्ण तरीके से अन्याय अत्याचार व शोषण का मुकाबला करें।

५- ऐसे ग्रुपों से दूर रहें जिसमें आतंक और उग्रवाद का अंश हो क्योंकि ऐसे ग्रुप आज इस्लाम और मुसलमानों को नुकसान पहुंचाने का घातक उपकरण बन चुके हैं और उन पर क्रूर दमनकारी शक्तियों का कब्जा है।

६- जिस देश में मुसलमान बतौर अल्पसंख्यक रह रहे हों उसकी शांति और स्थिरता की रक्षा करें , उसके निर्माण व विकास में महत्वपूर्ण योगदान करें चाहे वह महाजिर हों या शरणार्थी या वहाँ के मूल नागरिक। वहां के निवासियों के साथ भाईचारे और प्रेम के साथ रहें और वहां पर मौजूद ज्ञान और संगठनात्मक विकास से भरपूर फ़ायदा उठाएं।

७- न्याय पर आधारित मुद्दों में एक दूसरे का समर्थन करें , आपस में एक दूसरे के कामों में रुचि लें, कठिन परिस्थितियों में एक दूसरे का साथ दें, उनके लहयेगी बनें चाहे उनके बीच कितनी ही दूरी हो और उनके क्षेत्रीय हालात कितने ही जटिल हों और यह कि फिलिस्तीन और मस्जिद अक्सा का मुद्दा हमेशा उनके सामने रहे क्योंकि यह उनका केंद्रीय और बुनियादी मुद्दा है।